

पद ९

(राग: छंद - ताल: धुमाळी)

पहा किती दैव उघडलें आमुचें। देखिलें रूप श्रीप्रभुचें॥ध्रु.॥ हा
विश्वरूप गिरिधारी। निजकृपें जीव हे तारी। ही माय जगां
उपकारी। अति संकट सर्वहि वारि। मी सकलमतस्थापक हें।
गाजवी ब्रीदही पाही॥१॥ अहो चला चला आम्ही जाऊं।
डोळ्याने रूप हें पाहूं। श्रीहस्तेन प्रसाद घेऊं। मग जन्मवरी सुखी
राहूं। पूजनें धन्यता लेवू। स्वस्वरूपसुख हें घेऊं॥२॥ हा सगुण
देह श्रीगुरुचा। मग पहाया न मिळे साचा। हा कंद निजानंदचा।
ज्ञानरूप मार्तांडाचा॥३॥